

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES

152

THE GANESA PURĀṆA

*(With Introduction, Short Story in Hindi & Sanskrit, Critically Edited
SANSKRIT TEXT and HINDI TRANSLATION and Appendices)*

Edited and Translated by

DR. MAHESH CHANDRA JOSHI

M.A., SAHITYACHARYA, Ph.D.



CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

१.	राजा सोमकान्त विषयक कथा	१-५
२.	गलित्कुष्ठ पीडित राजा सोमकान्त का वनगमन का निश्चय	६-६
३.	सोमकान्त के द्वारा राजकुमार हेमकण्ठ को आह्निकाचार, सदाचार और राजधर्म का उपदेश तथा उसका राज्याभिषेक	१०-१५
४.	दो मन्त्रियों तथा पत्नी सुधर्मा सहित राजा सोमकान्त का वन-गमन	१६-२०
५.	वन में सोमकान्त की पत्नी सुधर्मा के साथ भृगुपुत्र च्यवन का वार्तालाप	२१-२६
६.	पत्नी और दो मन्त्रियों सहित सोमकान्त का भृगु के आश्रम में गमन	२७-३०
७.	भृगु के द्वारा सोमकान्त के पूर्वजन्म का वर्णन	३१-३६
८.	अपने पूर्वजन्म के विषय में शंकालु सोमकान्त पर उसी के शरीर से प्रादुर्भूत पक्षियों का आक्रमण, भृगु की हुंकार से उन पक्षियों का पलायन	३७-४१
९.	भृगु का सोमकान्त को गणेशपुराण सुनाने का उपक्रम	४२-४६
१०.	विद्यामद के कारण कुण्ठित बुद्धि वाले व्यास जी को ब्रह्मा के द्वारा गणेश जी की आराधना का उपदेश	४७-५०
११.	गणेश जी के मन्त्रानुष्ठान की विधि का निरूपण	५१-५४
१२.	जल-प्रलय काल में ब्रह्मा, विष्णु और शिव को गणेश जी का दर्शन	५५-५८
१३.	ब्रह्मा, विष्णु और शिव के द्वारा गणेश जी की स्तुति, गणेश जी के द्वारा सृष्टि-स्वरूप के प्रदर्शन हेतु ब्रह्मा को (तथा विष्णु और शिव को भी) श्वास वायु से अपने उदर में प्रविष्ट करा कर वहाँ नाना ब्रह्माण्डों का दर्शन करा कर नासा-रन्ध्र से बाहर निकालने का वर्णन	५९-६४
१४.	सृष्टि कर्म में विघ्न-बाधित चिन्ताकुल ब्रह्मा को आकाशवाणी के द्वारा वट-वृक्ष को देखने का आदेश	६५-६७
१५.	वटवृक्ष के पत्र में बालरूप गणेश जी के दर्शनोपरान्त ब्रह्मा का तपश्चरण	६८-७२
१६.	ब्रह्मा के द्वारा की गयी सृष्टि का वर्णन, मधुकैटभ से रक्षा हेतु ब्रह्मा के द्वारा योग-निद्रा की स्तुति	७३-७५
१७.	विष्णु का मधुकैटभ के साथ युद्ध, शिव के द्वारा विष्णु को षडक्षर मन्त्र के अनुष्ठान का उपदेश	७६-८०
१८.	गणेश जी से वरदान प्राप्त कर विष्णु के द्वारा मधुकैटभ का वध	८१-८५
१९.	राजा भीम के सन्तान-हीन होने का वर्णन, राजा वल्लभ की पत्नी कमला से मूक-बधिर एवं अपंग शिशु (दक्ष) के जन्म का वर्णन	८६-९१

२०.	राजा वल्लभ के द्वारा पत्नी कमला सहित निर्वासित विकलांग पुत्र दक्ष के स्वस्थ होने का वर्णन तथा उस दक्ष के द्वारा गणेश जी की स्तुति	६२-६७
२१.	दक्ष-मुद्गल संवाद, मुद्गल द्वारा दक्ष को एकाक्षर मंत्र का उपदेश तथा उसके अनुष्ठान का आदेश	६८-१०२
२२.	बल्लाल के द्वारा वन में विनायक मूर्ति की आराधना, उसके पिता कल्याण के द्वारा उस मूर्ति को फेंककर बल्लाल को ताड़ित करके बाँधे जाने पर बल्लाल का पिता कल्याण को अन्धा, बधिर, मूक एवं पंगु होने का शाप	१०३-१०८
२३.	कल्याण वैश्य को शाप देकर बल्लाल का विमान से विनायक-लोक गमन	१०९-११३
२४.	दक्ष के द्वारा गणेश जी की उपासना, दक्ष को राज्य-प्राप्ति सूचक स्वप्न	११४-११५
२५.	दिवंगत राजा चन्द्रसेन के उत्तराधिकारी के विषय में मुद्गल का निर्णय	११६-११८
२६.	दक्ष की राज्यप्राप्ति और उसकी वंश परम्परा का वर्णन	११९-१२२
२७.	राजा भीम के पुत्र रुक्मांगद के जन्म से लेकर उसके राज्याभिषेक तक का वर्णन	१२३-१२५
२८.	मुकुन्दा के शाप से रुक्मांगद के कुष्ठग्रस्त होने का वर्णन	१२६-१२८
२९.	नारद का रुक्मांगद को कुष्ठ से मुक्ति हेतु विदर्भ के कदम्बनगरस्थ चिन्तामणि विनायक-पार्श्वस्थ गणेशकुण्ड में स्नान का उपदेश	१२९-१३१
३०.	इन्द्रकृत अहल्या-धर्षण	१३२-१३४
३१.	इन्द्र और अहल्या को गौतम का शाप	१३५-१३७
३२.	देवों की प्रार्थना पर गौतम द्वारा इन्द्र के सहस्रनेत्र होने का कथन तथा उसके लिए गणेश जी के षडक्षर मन्त्र के जप का निर्देश	१३८-१४१
३३.	बृहस्पति के द्वारा इन्द्र को षडक्षर मन्त्र का उपदेश, इन्द्र को सहस्रनेत्रों की प्राप्ति	१४२-१४४
३४.	कदम्बपुर के चिन्तामणि तीर्थ में अनुष्ठानरत इन्द्र पर गणेश जी का अनुग्रह	१४५-१४९
३५.	चिन्तामणि तीर्थ के गणेशकुण्ड में स्नान से कुष्ठरोग से मुक्त देह वाले रुक्मांगद का माता-पिता आदि सहित विमान से गणेशलोक गमन	१५०-१५४
३६.	वाचकनवि की पत्नी मुकुन्दा के साथ इन्द्र के समागम से गृत्समद का जन्म, गृत्समद के शाप से मुकुन्दा के बदरी वृक्ष होने का वर्णन	१५५-१५९
३७.	गृत्समद के तप और मन्त्र-जप से प्रसन्न गणेश जी के द्वारा उसको ऋषि घोषित करके अजेय पुत्र की प्राप्ति का वरदान	१६०-१६४
३८.	गृत्समद के छींकने से त्रिपुरासुर का जन्म, गणेश जी के द्वारा उसको त्रिपुर (तीन पुर) प्रदान	१६५-१६९
३९.	त्रिपुरासुर का इन्द्र को पराजित कर अमरावती में अधिकार	१७०-१७५
४०.	देवों के द्वारा संकष्टनाशनस्तोत्र से गणेश जी की स्तुति	१७६-१८१

४१.	गणेश जी के द्वारा कलाधर विप्ररूप में जाकर त्रिपुर को तीन पुर प्रदान करके कैलास्थ गणेशमूर्ति की याचना	१८२-१८४
४२.	त्रिपुरासुर का शिव के साथ युद्ध	१८५-१८८
४३.	त्रिपुरासुर के साथ युद्ध में शिव की पराजय, हिमवान् के द्वारा पार्वती को त्रिपुरासुर से रक्षा हेतु दुर्गम गृह में स्थापन	१८९-१९३
४४.	त्रिपुरासुर से पराजित शिव के द्वारा दण्डकारण्य देश में जाकर गणेश जी की आराधना हेतु तपश्चर्या	१९४-१९७
४५.	शिव के द्वारा गणेश-स्तुति, गणेश द्वारा शिव को युद्ध में विजय हेतु उपाय-निर्देश	१९८-२०१
४६.	श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्र	२०२-२१६
४७.	शिव के द्वारा त्रिपुर-दाह	२२०-२२५
४८.	हिमालय की गुफा से बाहर आयी पार्वती को हिमवान् के शिव-प्राप्ति हेतु द्वारा गणेश जी की उपासना का उपदेश	२२६-२२९
४९.	श्री गणेश जी की पार्थिव-मूर्ति की पूजन विधि	२३०-२३७
५०.	गणेश-मन्त्र के अनुष्ठान और गणेशचतुर्थीव्रत का विधान	२३८-२४०
५१.	गणेशचतुर्थीव्रतानुष्ठान की विधि तथा उस व्रत के माहात्म्य का वर्णन	२४१-२५०
५२.	राजा नल के द्वारा पूर्वजन्म में किये गये गणेशचतुर्थी-व्रत का वर्णन	२५१-२५४
५३.	राजा चन्द्राङ्गद और उसकी पत्नी इन्दुमती विषयक कथा	२५५-२५८
५४.	नारद के द्वारा इन्दुमती को गणेशचतुर्थीव्रत का उपदेश	२५९-२६२
५५.	गणेशचतुर्थीव्रत के पुण्य से इन्दुमती और राजा चन्द्रसेन तथा पार्वती एवं शिव के पुनर्मिलन का वर्णन	२६३-२६७
५६.	मध्यदेश के राजा शूरसेन की राजधानी में इन्द्र के विमान के पतन का वर्णन	२६८-२७१
५७.	भूशूण्डी विषयक आख्यान	२७२-२७६
५८.	भूशूण्डी के द्वारा नरकस्थ पितरों के निमित्त संकष्टचतुर्थीव्रत का पुण्य-प्रदान करने पर उनका कुम्भीपाक नरक से उद्धार	२७७-२८०
५९.	साम नामक अन्त्यज का कृतवीर्य के रूप में जन्म, पुत्रहीन कृतवीर्य के लिए ब्रह्मा के द्वारा उसके पिता को संकष्टचतुर्थी व्रत-विधि का उपदेश	२८१-२८४
६०.	भारद्वाज मुनि के रेतःस्खलन से भौम का जन्म, भौम के तप से प्रसन्न गणेश जी के द्वारा भौमवार युक्त कृष्ण चतुर्थी तिथि को उसे दर्शन दिये जाने के कारण भौमवार युक्त कृष्ण चतुर्थी तिथि के विशेष महत्त्व का वर्णन	२८५-२८९

६१.	गणेश जी का चन्द्रमा को शाप, भाद्रकृष्णचतुर्थी को चन्द्र दर्शन निषेध	२६०-२६५
६२.	गणेश जी को दूर्वाङ्कुरार्पण-महत्त्व-द्योतक रासभ, वृषभ तथा चाण्डाली विषयक कथा	२६६-३००
६३.	अनुलासुर का आतङ्क और उसके प्रशमन हेतु गणेश जी का बाल रूप में आगमन	३०१-३०५
६४.	बालरूप गणेश द्वारा अनुलासुर का निगरण कर कण्ठ में धारण करना और तज्जनित दाह का अठासी हजार मुनियों में से प्रत्येक के द्वारा अर्पित इक्कीस दूर्वाङ्कुरों से प्रशमन	३०६-३०८
६५.	जनक की वदान्यता के अभिमान-मर्दन हेतु कुष्ठी वेश में गये गणेश जी का सम्पूर्ण राज्य का अन्न भक्षण करने पर भी अतृप्त रहने की कथा का वर्णन	३०९-३१२
६६.	अकिञ्चन द्विज त्रिशिरा की पत्नी के द्वारा समस्त व्यञ्जनों की कल्पना करके प्रदत्त एक दूर्वाङ्कुर से तृप्त गणेश जी का अपने वास्तविक रूप में प्रकट होकर उनको वरदान देने की कथा	३१३-३१६
६७.	कौण्डिन्य की पत्नी आश्रया के द्वारा एक दूर्वाङ्कुर तुल्य सुवर्ण याचना किये जाने पर कुवेर की सम्पूर्ण सम्पदा का भी तत्तुल्य न होने की कथा से दूर्वाङ्कुरार्पण के महत्त्व का वर्णन	३१७-३२२
६८.	कृतवीर्य के दिवंगत पिता के द्वारा स्वप्न में आकर उसको संकष्टचतुर्थीव्रत एवं अंगारकचतुर्थी व्रत-विधान विषयक पुस्तक प्रदान की कथा	३२३-३२६
६९.	संकष्टचतुर्थीव्रत-विधि	३२७-३३४
७०.	संकष्टचतुर्थीव्रत-कर्ताओं का उल्लेख तथा इस व्रत का महत्त्व	३३५-३३७
७१.	संकष्टचतुर्थी-व्रतोद्यापन विधान	३३८-३४०
७२.	कृतवीर्य की पत्नी के गर्भ से विकलांग बालक कार्तवीर्य का जन्म, उस बालक के बारहवें वर्ष में दत्तात्रेय के उपदेशानुसार उसे गणेश जी की आराधना हेतु वन में पर्णकुटी में रखे जाने की कथा	३४१-३४५
७३.	गणेश जी के द्वारा अणिमा का आश्रय लेकर विकलांग कार्तवीर्य की देह में प्रविष्ट होकर उसे सर्वाङ्गपूर्ण, स्वस्थ और सहस्रबाहु बनाये जाने की कथा	३४६-३४९
७४.	गणेश नाम के उच्चारण से एक कुष्ठग्रस्त चाण्डाली के विमान से विनायक लोक गमन की कथा, उस चाण्डाली के दृष्टिपात से इन्द्र के विमान के भूमि से उठकर चल पड़ने की कथा	३५०-३५४
७५.	शूरसेन कृत संकष्टचतुर्थीव्रत से प्रसन्न गणेश जी द्वारा विमान-प्रेषण, शूरसेन का अपनी प्रजा सहित विमान में आरोहण	३५५-३५८
७६.	विमान में बैठे पूर्वजन्म के पापी एक कुष्ठी के कान में गजानन नामोच्चारण के पश्चात् उस अचल विमान के विनायक लोक को प्रस्थान का वर्णन	३५९-३६६
७७.	जमदग्नि के द्वारा अपने आश्रम में सेना सहित आये हुए कार्तवीर्य का सत्कार	३६७-३७२

७८. जमदग्नि की कामधेनु को अपने साथ ले जाने का कार्तवीर्य का निर्णय ३७३-३७६
७९. कामधेनु के द्वारा प्रकटीकृत सेना से युद्ध में पराजित कार्तवीर्य के द्वारा जमदग्नि की हत्या तथा रेणुका का इक्कीस बाणों से वेधन ३७७-३८०
८०. परशुराम को इक्कीस बार पृथिवी को क्षत्रियहीन बनाने का रेणुका का आदेश ३८१-३८३
८१. परशुराम के द्वारा दत्तात्रेयोक्त मन्त्रों से माता-पिता की और्ध्वदेहिक क्रिया का निष्पादन, पाँचवें दिन व्याघ्र से भयभीत परशुराम के आस्वान पर अपूर्ण दशगात्र वाली रेणुका का आगमन ३८४-३८७
८२. परशुराम द्वारा शिव की आराधना, शिव प्रदत्त मन्त्र से गणेश जी की आराधना और उनके द्वारा प्रदत्त परशु से पृथिवी को क्षत्रियहीन करने का वर्णन ३८८-३९२
८३. तारकासुर से पीडित देवों के द्वारा शिव को तपोविरत करने हेतु उनके पास कामदेव का प्रेषण ३९३-३९७
८४. शिव के द्वारा काम-दहन ३९८-४००
८५. कार्तिकेय जन्म विषयक कथा ४०१-४०५
८६. कार्तिकेय का देवसेनापति पद पर अभिषेक, शिव के द्वारा कार्तिकेय को वरदचतुर्थी व्रत का उपदेश ४०६-४०८
८७. वरदचतुर्थी-व्रत-विधि निरूपण, गणेश जी से वरदान पाकर कार्तिकेय के द्वारा युद्ध में तारकासुर का वध ४०९-४१५
८८. रति की प्रार्थना पर शिव के द्वारा कामदेव को पुनर्जीवनदान ४१६-४२०
८९. काम का पद्मरूप में जन्म, शम्बरासुरवध विषयक कथा, शेषनाग का स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानना, शिव के द्वारा उसे भूमि में पटक कर उसका दर्प-भञ्जन ४२१-४२५
९०. शेषनाग के द्वारा गणेश जी की आराधना और गणेश जी के द्वारा शेषनाग को अभीष्ट वरदान ४२६-४३१
९१. गणेश जी की आराधना से अभीष्ट वरदान पाकर कश्यप के द्वारा दिति, अदिति आदि पत्नियों से सन्तानोत्पादन, कश्यप की सन्तानों के द्वारा गणेश जी की आराधना ४३२-४३७
९२. कश्यप-सन्तानों के द्वारा गणेश जी की द्वादश-मूर्तियों की स्थापना, उक्त द्वादश-मूर्तियों के सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, (सुमुखश्चैकदन्तश्च).....इत्यादि द्वादश नामों के कीर्तन का महत्त्व ४३८-४४३

१.	युग-युग में गणेश जी के विभिन्न अवतारों तथा देवान्तक एवं नरान्तक के जन्म का वर्णन	४४७-४५२
२.	देवान्तक और नरान्तक के तप से प्रसन्न शिव का उनको त्रैलोक्य में एकछत्र राज्याधिकार का वरदान	४५३-४५६
३.	देवान्तक के द्वारा देवलोक पर विजय	४५७-४६१
४.	नरान्तक के द्वारा भूलोक और पाताललोक पर विजय	४६२-४६४
५.	अदिति के तप से प्रसन्न गणेश जी की उसके पुत्र रूप में जन्म की स्वीकृति का वरदान	४६५-४६६
६.	अदिति के गर्भ से महोत्कट (विनायक) का जन्म	४७०-४७४
७.	शिशु महोत्कट को विरजा राक्षसी के द्वारा निगलने तथा उस शिशु के द्वारा अपने आकार की वृद्धि करके उसके उदर को विदीर्ण करके बाहर निकलने की कथा	४७५-४७८
८.	शिशु महोत्कट के द्वारा शुक रूप धारी उद्धत तथा धुन्धुर नामक राक्षसों का वध तथा चित्रगन्धर्व का नक्र (मगरमच्छ) योनि से मोक्ष	४७९-४८२
९.	महोत्कट (विनायक) के द्वारा अपने मुख के अन्दर माता अदिति आदि को ब्रह्माण्ड-प्रदर्शन कराकर हाहा हूहू तुम्बुरु गन्धर्वों का भ्रम-निवारण	४८३-४८७
१०.	विनायक का व्रत-बन्ध संस्कार, विधात-पिंगाक्ष आदि पाँच राक्षसों का वध, देवादि द्वारा विनायक को उपहार एवं ब्रह्मादि देवों के द्वारा उनके नाना नामकरण	४८८-४९१
११.	विनायक के द्वारा इन्द्र के अभिमान का मर्दन, इन्द्र द्वारा उसके रोम के अन्तर्गत असंख्य ब्रह्माण्ड दर्शन, इन्द्रकृत विनायक स्तुति	४९२-४९६
१२.	विनायक का काशिराज के साथ काशी गमन, मार्ग में धूम्राक्ष का वध	४९७-५०२
१३.	विनायक के द्वारा विघण्ट, दन्तुर, पतंग, विधूल एवं पाषाण रूपधारी दैत्य का वध	५०३-५०७
१४.	काम और क्रोध नामक दैत्यों, मत्त गजराज एवं जृम्भा राक्षसी का वध	५०८-५१२
१५.	काशीपुरी दग्ध करने को उद्यत ज्वालास्य व्याघ्रास्य और दारुण दैत्य का वध	५१३-५१८
१६.	दण्डकारण्यस्थ भ्रूशुण्डी के द्वारा काशी में विनायक की पूजा देखकर काशिराज का भ्रूशुण्डी के आश्रम में गमन, विनायक के निमन्त्रण की भ्रूशुण्डी के द्वारा अस्वीकृति	५१९-५२३
१७.	काशिराज का पुनः भ्रूशुण्डी के पास जाकर गजानन का निमन्त्रण बतलाने पर भ्रूशुण्डी का तत्क्षण काशी आगमन, विनायक द्वारा गजानन रूप में दर्शन प्रदान	५२४-५२८
१८.	विनायक द्वारा हेम ज्योतिवद् नामधारी कपटी दैत्य का वध	५२९-५३३
१९.	विनायक के द्वारा कूप और कन्दर नामक दैत्यों का वध	५३४-५३८
२०.	काशीपुरी में प्रलय करने को उद्यत अम्भासुर, अन्धकासुर तथा तुङ्गासुर का वध	५३९-५४४
२१.	प्रतिशोध हेतु अदिति वेश में आयी अम्भासुर की माता भ्रमरा का वध	५४५-५५१
२२.	काशी के नागरिकों द्वारा अपने अपने घरों में विनायक के भोजन की व्यवस्था करना	५५२-५५६
२३.	विनायक का अकिञ्चन शुक्ल द्विज के घर में भोजन तथा उसे वरदान देना	५५७-५६१

२४.	विनायक के द्वारा एक साथ एक ही समय में नाना रूप धारण करके नाना गृहों में भोजन आदि कृत्य करना तथा सनक-सनन्दन को तत्त्वबोध कराना	५६२-५६६
२५.	सनक-सनन्दन द्वारा विनायक की स्तुति तथा भक्तिभाव से विनायक के प्रसन्न होने का वर्णन	५६७-५७०
२६.	भीम नामक व्याध तथा एक राक्षस के द्वारा गणेश मूर्ति पर शमीपत्र गिराये जाने के पुण्य से उनका विमान द्वारा विनायक-लोक-गमन	५७१-५७३
२७.	राजा साम्ब के दुराचारी और अत्याचारी होने का वर्णन	५७४-५७७
२८.	साम्ब और उसके मन्त्री के नरक यातना के पश्चात् नाना कुत्सित योनियों में जन्म का वर्णन	५७८-५८१
२९.	कश्यप पत्नी दिति की सन्तान-परम्परा का वर्णन, विरोचन वध की कथा का वर्णन	५८२-५८५
३०.	राजा बलि के शताश्वमेध को बाधित करने हेतु वामन का अवतार	५८६-५९०
३१.	वामनावतार के द्वारा बलि को पाताल में प्रेषण	५९१-५९६
३२.	राजा प्रियव्रत के द्वारा तिरस्कृत रानी कीर्ति के द्वारा गणेश जी की आराधना	५९७-६०१
३३.	गणेश जी के वरदान से रानी कीर्ति से पुत्र क्षिप्रप्रसादन का जन्म, सपत्नी प्रदत्त विष से मृत उस पुत्र के गृत्समद कथित उपाय से पुनर्जीवित होने का वर्णन	६०२-६०७
३४.	भृशुण्डी के शाप से औरव की पुत्री शमीका के शमीवृक्ष तथा धौम्य के पुत्र मन्दार के मन्दार-वृक्ष होने का वर्णन	६०८-६१२
३५.	औरव और शौनक के तप से प्रसन्न गणेश जी का मन्दार वृक्ष और शमीवृक्ष के मूल में निवास	६१३-६१६
३६.	सावित्री के शाप से देवों के नदी रूप होने पर देवियों के द्वारा गणेश जी की आराधना	६१७-६२०
३७.	गणेशकृपा से नदी रूप देवों का अंशतः देवरूप होना	६२१-६२४
३८.	शिव की आराधना से भस्मासुर के पुत्र दुरासद की वरप्राप्ति	६२५-६३०
३९.	दुरासदकृत भूमण्डल विजय, शिव का केदार क्षेत्र-गमन	६३१-६३४
४०.	पार्वती के मुखमण्डल से विनायक की उत्पत्ति	६३५-६३९
४१.	विनायक और दुरासद का युद्ध	६४०-६४२
४२.	विनायक के द्वारा दुरासद सेना के साथ युद्ध हेतु छप्पन विनायकों की सृष्टि	६४२-६४६
४३.	देवों और ऋषि-मुनियों के द्वारा विनायक-पूजन	६४७-६४८
४४.	काशी में दिवोदास के सुराज का वर्णन	६४९-६५१
४५.	शिव के द्वारा दिवोदास को बहिष्कृत करने के लिए प्रेषित देवादि का काशीवास	६५२-६५५
४६.	शिव द्वारा प्रेषित ज्योतिर्विद वेषधारी दुण्डिविनायक कृत भविष्यवाणी विषयक वर्णन	६५६-६५९
४७.	बौद्धरूप विष्णु द्वारा व्यामोहित काशीवासियों की पाप में प्रवृत्ति और दिवोदास का राज्य त्याग	६६०-६६३
४८.	शिव का केदार क्षेत्र से काशी आगमन, दुण्डिराज का कीर्तिपुत्र को वरदान	६६४-६६९
४९.	कीर्ति का अपने पुत्र सहित कर्णपुर को प्रत्यागमन, राजा प्रियव्रत के द्वारा पुत्र क्षिप्रप्रसादन का राज्याभिषेक, ब्रह्मा के द्वारा विनायक लोक का वर्णन	६७०-६७३
५०.	मुद्गल के द्वारा विनायकलोक एवं विनायक के विराट् रूप का वर्णन	६७४-६७९
५१.	विनायक प्रेषित विमान से काशिराज का विनायकलोक को प्रस्थान	६८०-६८३

५२. विमान से नाना लोकों को देखते हुए काशिराज का विनायक लोक में आगमन ६८४-६८६
५३. काशिराज का विनायक से मिलन और विनायक का स्तवन ६६०-६६५
५४. काशी में विनायक द्वारा एक साथ घर-घर में भोजन आदि क्रियाएँ, सनक-सनन्दन के मन में विनायक विषयक भ्रम की निवृत्ति, उनके द्वारा प्रासाद में विनायक मूर्ति की स्थापना ६६६-७०१
५५. विनायक द्वारा शुक्ल द्विज को सर्व सम्पदायुक्त भवन प्रदान एवं नरान्तक प्रेषित शूर और चपल संज्ञक दूतों का वध नहीं करने का वर्णन ७०२-७०६
५६. नरान्तक का सेना सहित काशीपुरी में आक्रमण हेतु प्रस्थान ७०७-७११
५७. युद्ध-क्षेत्र में दो अमात्य पुत्रों सहित काशिराज को बन्दी बनाकर नरान्तक का अपने नगर को प्रस्थान ७१२-७१६
५८. सिद्धिनिर्मित कालपुरुष के द्वारा नरान्तक सेना का भक्षण तथा नरान्तक को पकड़कर विनायक के पास आगमन ७१७-७२१
५९. कालपुरुष का विश्राम हेतु विनायक के मुख में प्रवेश करके तदाकार होना तथा अमात्यपुत्रों सहित काशिराज का विनायक के उदर में नाना ब्रह्माण्डों का दर्शन एवं रोमरन्ध्र से बहिरागमन ७२२-७२५
६०. विनायक और नरान्तक का युद्ध ७२६-७३०
६१. विनायक द्वारा विराट् रूप प्रदर्शित करके नरान्तक का मर्दन ७३१-७३४
६२. शोकाकुल सपत्नीक रौद्रकेतु का देवान्तक के पास जाना, देवान्तक के द्वारा प्रतिशोध हेतु काशीपुरी में आक्रमण ७३५-७३६
६३. विनायक के आदेश से सिद्धि द्वारा प्रेषित अणिमादि अष्टसिद्धियों का देवान्तक की सेना के साथ युद्ध ७४०-७४३
६४. देवान्तक की सेना के साथ युद्ध में सिद्धि सेना की पराजय ७४४-७४७
६५. गणेश की पत्नी बुद्धि के मुख से निर्गत कृत्या रूपा शक्ति के द्वारा देवान्तक सेना का संहार तथा देवान्तक को गुप्ताङ्ग में प्रविष्ट करके बुद्धि के साथ विनायक के सम्मुख गमन, देवान्तक का पलायन एवं कृत्या शक्ति का विनायक के मुख में विश्राम ७४८-७५०
६६. रौद्रकेतु एवं देवान्तक के द्वारा युद्ध विजय हेतु किये गये आभिचारिक कृत्य से अश्व का आविर्भाव, उस अश्व में आरूढ देवान्तक द्वारा युद्ध में सिद्धि सेना पर विजय ७५१-७५४
६७. विनायक का देवान्तक के साथ युद्ध ७५५-७५८
६८. देवान्तक के द्वारा निद्रास्त्र और गान्धर्वास्त्र का प्रयोग करके अभिचारोत्पन्न कृत्या के अंक में आरूढ होकर युद्ध में दिव्यास्त्रों का प्रयोग ७५९-७६३
६९. देवान्तक का अणिमा आदि अष्टसिद्धियों के साथ युद्ध के अनन्तर विनायक के साथ युद्ध में माया रूप अदिति का प्रदर्शन, विनायक का विराट् रूप प्रदर्शन ७६४-७६७
७०. विनायक के द्वारा देवान्तक का वध ७६८-७७०

७१.	विनायक का काशिराज के साथ कश्यपाश्रम को प्रस्थान	७७१-७७४
७२.	विनायक का निजलोक गमन, काशी में दुण्डिराज की मूर्ति स्थापना और पूजा का वर्णन	७७५-७७८
७३.	गण्डकीनगराधिपति चक्रपाणि की पत्नी का सौरव्रत से गर्भधारण, उसके द्वारा गर्भ का समुद्र में त्याग	७७९-७८४
७४.	चक्रपाणि भार्या द्वारा त्यक्त गर्भ से उत्पन्न शिशु का समुद्र के द्वारा उस राजा को समर्पण, उस बालक का 'सिन्धु' नाम रखा जाना, सिन्धु के द्वारा सूर्य की आराधना और अवध्य होने का वरदान लाभ	७८५-७८९
७५.	सिन्धु के द्वारा भूलोक और स्वर्गलोक पर विजय	७९०-७९३
७६.	विष्णु द्वारा युद्ध में सिन्धुसेना पर विजय	७९४-७९७
७७.	सिन्धु के द्वारा विष्णु आदि देवों को जीत कर गण्डकी नगर में बन्दी बनाना	७९८-८००
७८.	सिन्धु निगृहीत देवों द्वारा अङ्गारक चतुर्थी को गणेश की आराधना, गणेश जी का शीघ्र ही सिन्धुवध हेतु अवतार ग्रहण का आश्वासन	८०१-८०५
७९.	त्रिसन्ध्याक्षेत्रस्थ शिव के परामर्श से पार्वती के द्वारा लेखनाद्रि में जाकर गणेश जी की आराधना	८०६-८०९
८०.	पार्वती के तप से प्रसन्न गणेश जी की उनके पुत्र रूप जन्म की स्वीकृति	८१०-८१२
८१.	भाद्र शुक्ल चतुर्थी को पार्वती द्वारा पूजित गणेश मूर्ति का शिशुरूप में सजीव होना	८१३-८१६
८२.	मुनिगणों द्वारा पार्वती पुत्र का 'गुणेश' नामकरण, भाद्रशुक्ल चतुर्थी को गणेश पूजन न करने वालों को विघ्नों और रोगों से पीडा होने का उल्लेख, अपने वध की आकाशवाणी सुनकर सिन्धु द्वारा गुणेश के वध हेतु दूत-प्रेषण	८१७-८२१
८३.	हिमवान् द्वारा गुणेश को आभूषण प्रदान, गुणेश के द्वारा गृध्रासुर का वध	८२२-८२५
८४.	गुणेश के द्वारा आखुरूप क्षेम और कुशल दैत्य, बिडाल रूपधारी दैत्य तथा बालासुर का वध	८२६-८३१
८५.	गणेशकवच वर्णन	८३२-८३६
८६.	गुणेश का भूम्युपवेशन संस्कार, गुणेश के द्वारा व्योमासुर का वध	८३७-८३९
८७.	गुणेश के द्वारा शतमाहिषी-वध और कमठासुर-वध	८४०-८४५
८८.	गुणेश के द्वारा तल्पासुर तथा दुन्दुभि दैत्य का वध	८४६-८४९
८९.	गुणेश के द्वारा आजगरासुर तथा शलभासुर का वध	८५०-८५३
९०.	गुणेशकृत नृत्योत्सव का तथा नूपुराख्य दैत्य और अविपुत्र दैत्य के वध का वर्णन	८५४-८५७
९१.	कूट नामक दैत्य तथा मत्स्यासुर एवं शलभासुर का वध	८५८-८६३
९२.	गुणेश के द्वारा कर्दमासुर का वध, पार्वती को गुणेश के मुख के अन्दर सम्पूर्ण लोकों सहित ब्रह्माण्ड का दर्शन	८६४-८६८
९३.	गुणेश के द्वारा उष्ट्र रूपधारी खड्गासुर, छाया रूपधारी दैत्य तथा चञ्चल नामक दैत्य का वध	८६९-८७३
९४.	गुणेश के द्वारा गौतम के घर से ओदन पात्र लाकर वन में क्रीडा करने के लिए आये हुए अपने साथी मुनिबालकों को भोजन कराना	८७४-८७७

६५. विश्वकर्मा द्वारा पार्वती की स्तुति तथा गुणेश को पाश, अंकुश, परशु और पद्म प्रदान, गुणेश के द्वारा वृकासुर का वध ८७८-८८४
६६. गुणेश का व्रतबन्ध संस्कार, गुणेश के द्वारा गजरूपधारी कृतान्त और काल नामक दैत्यों का वध तथा अदिति को दर्शन प्रदान ८८५-८९०
६७. विनता के घर में कद्रू के अपमान से क्रुद्ध वासुकि आदि नागों का विनता एवं उसके श्वेन सम्पाति और जटायु नामक पुत्रों का बन्धन, कश्यप कृत गर्भाधान से विनता के गर्भ से अण्ड की उत्पत्ति ८९१-८९५
६८. गुणेश तथा साथी मुनि बालकों का वेद पारायण, एक विचित्र दैत्य का गुणेश के द्वारा वध, एक वृक्षकोटरस्थ अण्ड का गुणेश के हाथ से टूटने पर मयूर की उत्पत्ति, उस मयूर पर आरूढ होने, उसको अपना वाहन बनाने से गुणेश की मयूरेश संज्ञा ८९६-९००
६९. गुणेश के द्वारा अश्वरूपधारी दैत्य का वध, बालकों के साथ जलक्रीडारत गुणेश को नागकन्याओं के द्वारा नागलोक में ले जाये जाने का वर्णन, मुनि बालकों को निगलने वाले भगासुर के उदर में प्रविष्ट होकर उसे विदीर्ण करके गुणेश का उन बालकों के तद्भवत रूप में उनके घरों में तथा अपने घर में जाने का वर्णन ९०१-९०७
१००. शेष आदि नागों का दमन करके उनको अपने शरीर में लपेट कर मयूरेश का मुनि-बालकों सहित अपने घर को लौटने का वर्णन ९०८-९१२
१०१. मयूरेश के द्वारा कमलासुर-सैन्य के साथ युद्ध हेतु विशाल सेना का आविर्भाव, कमलासुर सेना की पराजय ९१३-९१७
१०२. मयूरेश का कमलासुर के साथ युद्ध ९१८-९२०
१०३. युद्ध में कमलासुर के रक्तबिन्दुओं से उत्पन्न असुरों का सिद्धिबुद्धि की सेना के द्वारा भक्षण, मयूरेश के द्वारा कमलासुर का वध, मयूरेश की स्तुति, विश्वकर्मा के द्वारा मयूरेशपुर का निर्माण ९२१-९२४
१०४. ब्रह्मा के द्वारा सृष्टि तिरोधान, मयूरेश द्वारा तद्भवत् सृष्टि का सृजन करके ब्रह्मा का दर्प-दलन, मयूरेश के द्वारा उसे अपने विराट् विश्वरूप का प्रदर्शन ९२५-९२९
१०५. विश्वदेव द्विज की विष्णु और विनायक में भेदबुद्धि का निवारण ९३०-९३५
१०६. मयूरेश द्वारा शिव-ललाटस्थ चन्द्रहरण लीला तथा मङ्गल दैत्य का वध, शिव के द्वारा गणों के अनुरोध पर मयूरेश को गणाधिपति घोषित किये जाने का वर्णन ९३६-९३९
१०७. मयूरेश के द्वारा माहिष रूपधारी कल-विंकल दैत्यों का वध, इन्द्रमख-विध्वंस तथा इन्द्र के गर्व का अपहरण ९४०-९४४
१०८. मयूरेश के द्वारा व्याघ्ररूपी दैत्य का विद्रूपकरण तथा यम को परास्त करके यमलोक से मुनि बालकों का आनयन ९४५-९४८
१०९. गण्डकीनगर के मार्ग में मयूरेश के आदेश से मुनि कुमारों के द्वारा कुशों से राक्षसों का वध ९४९-९५२
११०. सिन्धु द्वारा बन्दी बनाये गये देवों को स्वतन्त्र कराने हेतु दूत रूप में नन्दी को प्रेषित करना ९५३-९५५

१११. सिन्धु के द्वारा नन्दी के निरादर के पश्चात् मयूरेश का युद्ध हेतु निर्णय	६५६-६५६
११२. मयूरेश के गणों द्वारा सिन्धु सैन्य पराजय	६६०-६६२
११३. षडानन और वीरभद्र के द्वारा मित्र और कौस्तुभ दैत्य का वध	६६३-६६७
११४. सिन्धु सेना की पराजय का वर्णन	६६८-६७२
११५. युद्ध में मयूरेश के द्वारा सिन्धु को विद्रूप बनाना	६७३-६७७
११६. मयूरेश के अंग-स्पर्श युक्त वायु से देव-सैनिकों का पुनर्जीवित होना	६७८-६८२
११७. सिन्धु के साथ उसकी पत्नी दुर्गा का वार्तालाप	६८३-६८६
११८. स्कन्द और वीरभद्र के द्वारा युद्ध में कल और विकल का वध	६८७-६९०
११९. स्कन्द के द्वारा सिन्धु के धर्म और अधर्म नामक पुत्रों का वध	६९१-६९४
१२०. दोनों पुत्रों की मृत्यु पर माता दुर्गा का शोक, चक्रपाणि का देवों को मुक्त करने हेतु प्रदत्त उपदेश की सिन्धु के द्वारा अवज्ञा	६९५-१०००
१२१. युद्ध में सिन्धु सेना की पराजय का वर्णन	१००१-१००६
१२२. नन्दी, भृंगी, वीरभद्र तथा भूतराज के द्वारा सिन्धु सेना का संहार	१००७-१०११
१२३. मयूरेश के द्वारा सिन्धु दैत्य का वध, देवर्षियों द्वारा मयूरेश-स्तुति	१०१२-१०१७
१२४. सिन्धु की अन्त्येष्टि के पश्चात् चक्रपाणि द्वारा निमन्त्रित मयूरेश आदि का गण्डकीपुरी में गमन	१०१८-१०२३
१२५. मयूरेश की प्रथम पूज्यता और पञ्चदेवस्वरूपता का निरूपण एवं सिद्धि-बुद्धि के साथ विवाह	१०२४-१०२८
१२६. मयूरेशपुरी के चतुर्दिक् स्थापित देवों का वर्णन, मयूरेश का निजलोकगमन	१०२९-१०३४
१२७. ब्रह्मा की जैभाई से सिन्दूर की उत्पत्ति, ब्रह्मा का गजानन के हाथों उसके वध का शाप	१०३५-१०३८
१२८. सिन्दूर के द्वारा पार्वती का हरण, गजानन के सहयोग से सिन्दूर पर शिव की विजय और पार्वती को पुनः अवतार का आश्वासन देकर द्विजस्वरूपधारी गजानन का अन्तर्धान होना	१०३९-१०४५
१२९. देवर्षियों के द्वारा गणेश जी की आराधना, पार्वती का गर्भ-धारण	१०४६-१०४९
१३०. गजानन का अवतार	१०५०-१०५३
१३१. नन्दी के द्वारा गजानन को वरेण्यपत्नी के पास पहुँचाना	१०५४-१०५६
१३२. सिन्दूर के द्वारा पार्वती के प्रसवकक्ष से उठाये गये शिशु का नर्मदा में गिरने पर वहाँ नार्मद गणेश संज्ञक शिलाओं का प्रादुर्भाव, शिव-पार्वती का कैलाश को प्रस्थान	१०५७-१०६०
१३३. वरेण्य की पत्नी के प्रसवकक्ष में गजाननाकृति शिशु को देखकर उस राजा के आदेश से दूतों के द्वारा उसका वन में त्याग, उस शिशु का पराशर द्वारा पालन	१०६१-१०६३
१३४. वामदेव मुनि का क्रौञ्च गन्धर्व को मूषक बनकर गणेश का वाहन होने का शाप, पराशर के आश्रम में उपद्रवकारी मूषक का दमन कर गजानन द्वारा उसको अपना वाहन बनाना	१०६४-१०६८
१३५. सौभरि के शाप से क्रौञ्च गन्धर्व का मूषक बनकर गजानन का वाहन होने का वर्णन	१०६९-१०७२
१३६. गजानन का सिन्दूर के साथ युद्ध हेतु प्रस्थान	१०७३-१०७६
१३७. युद्ध क्षेत्र में गजानन के द्वारा सिन्दूर का मर्दन, उसके सुगन्धित रक्त से अपने अङ्गों का विलेपन, वरेण्य को गीता का उपदेश	१०७७-१०८२

१३८. सांख्ययोग का सार-कथन	१०८३-१०८६
१३९. कर्मयोग-निरूपण	१०९०-१०९४
१४०. कर्मयोग से ज्ञानयोग का अधिक महत्त्व	१०९५-१०९६
१४१. निष्काम कर्म, समत्वबुद्धि तथा प्राणायाम-भेद निरूपण	११००-११०४
१४२. योगाभ्यास विधि और मनोनिग्रह उपाय का निरूपण	११०५-११०७
१४३. परमात्मा की प्रकृति तथा उनके अधिष्ठानों और परमात्म-प्राप्ति के उपायों का वर्णन	११०८-११०९
१४४. शुक्ला और कृष्णगति का निरूपण तथा उपासना महत्त्व का वर्णन	१११०-१११२
१४५. गजानन के द्वारा वरेण्य को विश्वरूप-प्रदर्शन	१११३-१११५
१४६. भक्ति-माहात्म्य एवं क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, ज्ञान, ज्ञेय और गुणत्रय का निरूपण	१११६-१११९
१४७. देवी, आसुरी और राक्षसी प्रकृतियों का निरूपण तथा सात्त्विकी, राजसी और तामसी भक्ति का निरूपण	११२०-११२२
१४८. तप, दान, ज्ञान, कर्म और कर्ता के सात्त्विक, राजस और तामस भेदों और चारों वर्णों के कर्मों का निरूपण	११२३-११२७
१४९. ब्रह्मा के द्वारा गणेशावतार के विषय में व्यास के भ्रम का निवारण, कलियुग वर्णन, व्यासकृत तप का वर्णन	११२८-११३२
१५०. गणेश जी का व्यास को वरदान	११३३-११३५
१५१. सोमकान्त के द्वारा गणेशपुराण श्रवण पुण्ययुक्त जल के प्रक्षेपण से शुष्क (दग्ध) आम्रवृक्ष में फल लगने का वर्णन, सोमकान्त का विमान से विनायक लोक को प्रस्थान	११३६-११३९
१५२. सोमकान्त के विमान से देवपुर के समीप पहुँचने पर उसके दर्शनार्थ पुत्र हेमकण्ठ और पौरजनों का आगमन	११४०-११४४
१५३. सोमकान्त का अपने पुत्र आदि सहित गणेशलोक गमन	११४५-११४८
१५४. वाराणसीस्थ षटपञ्चाशत् (५६) विनायकों का वर्णन	११४९-११५०
१५५. गणेशपुराण-श्रवण से लाभान्वित व्यक्तियों का वर्णन तथा गणेशपुराण श्रवण का महत्त्व वर्णन	११५१-११५७

गणेशपुराण : परिशिष्ट

परिशिष्ट I श्रीमहागणपति-सहस्रनामावलि:	११५९-११७५
परिशिष्ट II गणेशपुराणस्थ कुछ भूतकालिक क्रिया-रूपों की सूची	११७६-११७८
परिशिष्ट III गणेशपुराण शब्दानुक्रमणी	११७९-१३१६
परिशिष्ट IV गणेशपुराणस्थ भौगोलिक शब्दों की सूची	१३१६-१३२५
परिशिष्ट V गणेशपुराणस्थ वनस्पति एवं जीव-जन्तुओं की सूची	१३२६-१३३३
परिशिष्ट VI गणेशपुराण श्लोकानुक्रमणी	१३३४-१५२३
गणेशपुराण के मूल पाठ की टिप्पणियों एवं भूमिका में उद्धृत मूल ग्रन्थों एवं सहायक ग्रन्थों की सूची	१५२४-१५२७
संकेत सूची	१५२८-१५२९